विचार बिन्दु

बड़े को छोटा बनकर रहना चाहिए, क्योंकि जो अपने आप को बड़ा मानता है, वह छोटा बन जाता है और जो छोटा बनता है वह बड़ा पद पाता है।

–ईसा

सहायता की तस्वीर

'तुलसी बब्बा कह गए हैं'–तुलसी और सनातन के आलोक में समकालीन जीवन तथा मानवीय मूल्यों पर साप्ताहिक अतिथि विचार–श्रृंखला की छठवीं कड़ी है।

पुष्कर में ब्रह्मा मंदिर और सरोवर के दर्शन के बाद हम पंचकुंड शिव मंदिर की ओर निकले थे। रास्ते में वन बहाली का एक काम देखने ठहर गए। कुछ परिवारों ने नई कोंपलें बचाने के लिए वन के एक हिस्से में कुछ समय अपने पशु न ले जाने की सहमति दी थी। बदले में उनके लिए बाहर से चारा आया था। गट्ठर तौले जा रहे थे। एक युवक नाम और मात्रा लिख रहा था; दूसरा फोन से तस्वीरें ले रहा था।

एक स्त्री ने अपना गट्ठर सँभालते हुए कहा, नाम लिख लो। मेरी तस्वीर कहीं मत भेजना। काम देखना हो तो उधर चलो, बाड़ हमने भी लगाई है। युवक ने फोन नीचे कर लिया। हम उस स्त्री के साथ बाड़ तक गए। सूखी टहनियों के बीच एक पुराने ठूँठ पर नई पत्तियाँ फूट आई थीं। वह उन्हें दिखाकर अपनी संगिनी के साथ चली गई।

पुष्पा बोलीं, जा बाई की बात मान लई, सो अच्छो भओ। पै हर जगह नाहीं कर पाबो इत्तो सहज होत है का? जीको चूल्हो इनई गठरियन सें जलत होय, ऊ नाहीं कैसें करै?

उनका प्रश्न उस युवक के व्यवहार से आगे जाता था। जिसे अगली बार भी सहायता चाहिए, वह देने वाले की इच्छा के विरुद्ध बोलते समय कितना निश्चिंत रह सकता है? उसकी चुप्पी में संकोच, कृतज्ञता और अवसर खोने की आशंका साथ बैठी हो सकती है। यही इस कड़ी का प्रश्न है: मदद पाने वाले का प्रदर्शन उसके सम्मान से क्या करता है? 'हाँ' सुन लेना पर्याप्त नहीं; 'ना' कहने पर सहायता और संबंध का क्या होगा, यह भी देखना पड़ता है।

तुलसी इस प्रश्न का उत्तर दाता के मन से आरम्भ करते हैं। शरण में आए विभीषण को राम लंका का राज्य देते हैं:–

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥
रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड, दोहा 49(ख)।

जो संपदा रावण ने दस सिर चढ़ाकर शिव से पाई थी, वही राम ने विभीषण को संकोच के साथ दी। पूरे दोहे का भार एक शब्द पर है: 'सकुचि'। देने वाला संकोच में है, पाने वाला नहीं। राम को लगता है कि जो दिया, वह कम है; और देते समय उनकी दृष्टि नीचे है। हमारी सहायता प्राय: उलटी चलती है। जिसे मिला, उसे छोटा और जिसने दिया, उसे विराट दिखाने की उतावली रहती है।

पुष्पा ने कहा, मदद मिली, सो मन सें असीस सोई दैहें। पै फोटो के आगे मुसक्याबो सोई जरूरी काय होय?

स्वत: उमड़ी कृतज्ञता संबंध को सुंदर करती है; उसकी अनिवार्य नुमाइश संबंध पर बोझ रखती है। गीता उस दान को राजस कहती है जिसमें बदले की चाह छिपी हो:

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुन:।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्॥
श्रीमद्भगवद्गीता 17.21।

जो दान प्रत्युपकार के लिए, किसी फल को लक्ष्य करके या मन में क्लेश रखकर दिया जाए, वह राजस है। आज वह बदला रुपये में नहीं माँगा जाता। किसी के संकट से अपने लिए यश, प्रचार या अनुदान की अगली किस्त जुटाना 'फलमुद्दिश्य' का नया रूप है। हर सार्वजनिक सहायता को दिखावा कहना अनुचित होगा; पर अपने उद्देश्य की जाँच फिर भी आवश्यक है।

बाड़ के भीतर ठूँठ के कटान पर मेरा ध्यान अटक गया। जड़ के पास से नया प्ररोह निकला था। कुछ वृक्षों की जीवित जड़ें बार-बार कटने के बाद भी फिर फूटती हैं, बशर्ते उन्हें चराई, आग और कटान से कुछ बरस का विश्राम मिले। पर एक हरी कोंपल पूरे वन के लौटने का प्रमाण नहीं होती।

पुष्पा हँसीं, कोंपल दिखी नईं कि तुमाओ ग्यान बरसन लगो! फिर बाड़ की ओर देखकर बोलीं, इन सबनें सोई तौ बाड़ बाँधी, रखवारी करी। चारे की फोटो में तौ बस हाथ पसारत दिखहैं।

यह इस कड़ी की सबसे गहरी बात थी। तस्वीर उस क्षण को पकड़ती है जिसमें किसी का हाथ आगे बढ़ा है। उससे पहले का उसका श्रम छूट जाता है। इन परिवारों ने पशुओं के लिए दूसरी व्यवस्था की, रखवाली की, बाड़ सँभाली। चारा दान नहीं, साझे काम का हिस्सा था। तस्वीर ने उन्हें लेने वाला बना दिया, जबकि वे इस वन के सहभागी थे।

जो दान प्रत्युपकार के लिए, किसी फल को लक्ष्य करके या मन में क्लेश रखकर दिया जाए, वह राजस है। आज वह बदला रुपये में नहीं माँगा जाता। किसी के संकट से अपने लिए यश, प्रचार या अनुदान की अगली किस्त जुटाना 'फलमुद्दिश्य' का नया रूप है। हर सार्वजनिक सहायता को दिखावा कहना अनुचित होगा; पर अपने उद्देश्य की जाँच फिर भी आवश्यक है।

सीता का समाचार लेकर लौटे हनुमान से राम कहते हैं:–

सुनु कपि तोहि समान उपकारी।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी॥
प्रति उपकार करौं का तोरा।
सनमुख होइ न सकत मन मोरा॥
रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड, दोहा 32 से पूर्व, चौपाई 3।

यहाँ सहायता पाने वाले राम हैं। वे स्वीकारते हैं कि बदला चुकाना संभव नहीं, और उनका मन हनुमान के सामने होने में सकुचाता है। उपकार स्वीकार करने से उनका गौरव घटता नहीं, बढ़ता है। देने और पाने की भूमिकाएँ किसी मनुष्य का स्थायी परिचय नहीं; आज जो ले रहा है, वह किसी और क्षेत्र में हमें देने वाला है।

पुष्पा कुछ देर चुप रहीं, फिर बोलीं, इननें काम करो, सो इनको मान। पै जौन खटिया पै परो होय, कछू कर न पावै, ऊको मान कौन खाते में डारहौ?

उनकी आपत्ति ने मेरे तर्क की सीमा खोल दी। अनदेखे योगदान को पहचानना जरूरी है, पर यदि सम्मान को योगदान का पुरस्कार बना दें, तो असमर्थ व्यक्ति फिर बाहर रह जाएगा। विनयपत्रिका का यह पद उस उदारता को दिखाता है जो लेन-देन से पहले की है:–

ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं॥
विनयपत्रिका, पद 162, प्रथम अन्तरा।

राम की करुणा के लिए पहले सेवा करके पात्रता कमानी नहीं पड़ती। उसी तरह किसी का मान रखने से पहले उससे उपयोगिता का प्रमाण नहीं माँगना चाहिए। गरिमा उसके मनुष्य होने से जुड़ी है; हमारी सहायता उसे पैदा नहीं करती, केवल बचा या घटा सकती है।

मैंने एक व्यावहारिक आपत्ति रखी, पर जो पैसा देते हैं, उन्हें भरोसेमंद हिसाब चाहिए। केवल बाड़ दिखाकर कैसे बताएँगे कि चारा सही परिवारों तक पहुँचा?

पुष्पा बोलीं, हिसाब पाई-पाई देओ। पै सबके सामने इनें ठाड़ो कर देबोई हिसाब है का? हिसाब कागद में होत है, मूँ में नईं।

खरीद का बिल, मात्रा, वितरण का अभिलेख और पाने वाले की पुष्टि जाँची जा सकती है। आवश्यक पहचान जिम्मेदार जाँचकर्ता तक सीमित रहे। फोटो लेना, उसे जाँच के लिए रखना और उसे सार्वजनिक करना तीन अलग निर्णय हैं। सार्वजनिक विवरण में खर्च, काम की प्रगति और कमियाँ आएँ, चेहरे नहीं। निजता की आड़ में हिसाब छिपाना भी उतना ही अनुचित है। तैत्तिरीय उपनिषद् देने की मन:स्थिति पर ध्यान दिलाता है:–

श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयाऽदेयम्। श्रिया देयम्।
ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्।
तैत्तिरीय उपनिषद्, शिक्षावल्ली 1.11.3।

श्रद्धा से दो, संपन्नता के अनुरूप दो, और 'ह्रिया देयम्', लज्जा से दो। यह लज्जा देने वाले की है: इस बात की कि किसी को लेना पड़ रहा है, और हम उसमें केवल माध्यम हैं। 'संविदा देयम्' में समझ और सहमति, दोनों का भाव है।

अपनी इच्छा कहने की स्वतंत्रता का सबसे सुंदर उदाहरण केवट है। गंगा पार कराने के बाद राम, लक्ष्मण और सीता के आग्रह पर भी वह कुछ नहीं लेता:–

बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ॥
रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 102।

यह भक्त का अपना चुनाव है, किसी श्रमिक का पारिश्रमिक रोकने का तर्क नहीं। राम उसके चुनाव का मान रखते हैं; अपनी उदारता उस पर थोपते नहीं, उसकी माँग के अनुरूप वर देते हैं। कोई अपनी बात स्वयं सबको सुनाना चाहे, तो वह भी उसका चुनाव है। गरिमा का अर्थ किसी को सदा परदे में रखना नहीं, उसे यह तय करने देना है कि वह कितना, कहाँ और किसके सामने आएगा।

लौटते समय पुष्पा ने फोन निकाला, कोंपल के संगै तुमाई सोई फोटो ले लें? फिर आँख मिचका कर बोलीं, पूछ तौ लओ। अब तुम नाहीं करौ, तौ? मैंने हँसकर कहा, तब भी मेरा मान बचा रहेगा, और तुम्हारा सवाल भी।

इसलिए इस कड़ी का उत्तर साफ है। मदद पाने वाले का प्रदर्शन उसे उसके जीवन के एक कठिन क्षण में बाँध देता है और देने वाले को कथा का नायक बना देता है। तस्वीर लेने और नाम छापने से पहले स्वतंत्र सहमति पूछना, इनकार पर सहायता न रोकना, एक उपयोग की अनुमति को हर उपयोग की अनुमति न मानना, और हिसाब को चेहरे की जगह खर्च, मात्रा और परिणाम से देना, यह जिम्मेदारी सहायता करने वाले व्यक्ति और संस्था की है। हाथ में दिया गया सहारा उसकी आवाज का अधिकार हमें नहीं सौंप देता।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

जैपुर - तीन सदियों का गुलाबी सफ़र

जयपुर स्थापना दिवस पर विशेष आलेख



डॉ. गोरधन लाल शर्मा

■ गुलाबी नगरी जयपुर : दूरदर्शी सोच, अद्भुत नगर नियोजन और गौरवशाली विरासत की 299 वर्षों की गाथा

राजा सवाई जयसिंह की वैज्ञानिक दृष्टि, वास्तुकार विद्याधर की शिल्पकला और सुव्यवस्थित नगर-रचना ने जयपुर को दुनिया के चुनिंदा नियोजित शहरों में विशिष्ट पहचान दिलाई।

भारत के इतिहास में जयपुर एक ऐसा अनूठा नगर है, जिसकी पहचान राजसी वैभव, स्थापत्य कला, सांस्कृतिक विरासत और दूरदर्शी नगर नियोजन के अद्भुत संगम से बनी है। यहां की चौड़ी सड़कें, व्यवस्थित बाजार, चौपड़, भव्य हवेलियां, मंदिर, महल और सुरक्षा के लिए बना परकोटा किसी संयोग का परिणाम नहीं, बल्कि लगभग तीन शताब्दी पहले देखे गए एक ऐसे स्वप्न की साकार अभिव्यक्ति हैं, जिसमें विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र, वास्तुशिल्प और जनसुविधा का अनूठा समन्वय था।

18 नवंबर 2026 को जयपुर अपनी स्थापना के 299 वर्ष पूरे करने जा रहा है। यह अवसर उस दूरदर्शी सोच को याद करने का भी है, जिसने राजस्थान की धरती पर एक ऐसा शहर बसाया, जिसका नगर नियोजन आज भी दुनिया के वास्तुकारों और इतिहासकारों के लिए अध्ययन का विषय है।

सत्ता से विज्ञान तक : एक दूरदर्शी शासक की कल्पना - जयपुर की स्थापना का श्रेय कछवाहा वंश के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय को जाता है। वे केवल कुशल शासक और कूटनीतिज्ञ ही नहीं, बल्कि गणित, खगोलशास्त्र, ज्योतिष और विज्ञान में गहरी रुचि रखने वाले विद्वान भी थे। विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों और खगोलविदों के विचारों का अध्ययन उनकी बौद्धिक जिज्ञासा का प्रमाण था।

खगोलीय गणनाओं को अधिक सटीक बनाने के लिए उन्होंने दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, मथुरा और वाराणसी में वेधशालाओं का निर्माण कराया। जयपुर का जंतर-मंतर आज भी उनकी वैज्ञानिक दृष्टि का जीवंत प्रमाण है।

आमेर की सीमाओं और बढ़ती आवश्यकताओं को देखते हुए उन्होंने एक नई राजधानी बसाने का निर्णय लिया। उनकी कल्पना में ऐसा नगर था, जहां व्यापार, आवास, प्रशासन, सुरक्षा और धार्मिक गतिविधियों के लिए सुव्यवस्थित स्थान हों।

विद्याधर भट्टाचार्य ने कागज पर रचा गुलाबी नगरी का खाका - इस स्वप्न को साकार करने की जिम्मेदारी वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य को सौंपी गई। बंगाल से आए विद्याधर ने भारतीय वास्तुशास्त्र, गणितीय सिद्धांतों और शिल्प परंपराओं का समन्वय कर जयपुर की रूपरेखा तैयार की। 18 नवंबर 1727 को जयपुर की स्थापना हुई। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि शहर को बसाने से पहले उसकी संपूर्ण योजना तैयार की गई। नगर को नौ चौकड़ियों में विभाजित किया गया। इनमें राजमहल और प्रशासनिक केंद्र के साथ आवासीय तथा व्यावसायिक गतिविधियों के लिए अलग-अलग क्षेत्र निर्धारित किए गए।

चौकड़ी सरहद, रामचंद्रजी, गंगापोल, तोपखाना हजूरी, घाट दरवाजा, विश्वेश्वरजी, मोदीखाना, तोपखाना देश और पुरानी बस्ती इस ऐतिहासिक व्यवस्था के प्रमुख हिस्से रहे। नगर के उत्तर में पहाड़ियों और दक्षिण में परकोटे तथा दरवाजों ने इसकी सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाया।

चौड़ी सड़कें, चौपड़ और बाजार : नियोजन का अनूठा उदाहरण - जयपुर की नगर योजना का सबसे आकर्षक पक्ष इसकी सड़क व्यवस्था है। मुख्य मार्गों की चौड़ाई लगभग 108 फीट और अन्य प्रमुख मार्गों की 54 फीट रखी गई। उस दौर में यह व्यवस्था अत्यंत दूरदर्शी थी, जब अधिकांश नगर संकरी और अनियोजित गलियों से पहचाने जाते थे। बड़ी चौपड़ और छोटी चौपड़ ने शहर को सामाजिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र दिए। इनके बीच फैले बाजारों में एक जैसी स्थापत्य शैली में बनी दुकानें, बरामदे, मेहराबदार द्वार और छज्जे जयपुर की अलग पहचान बन गए।

बाजारों के बरामदों का उद्देश्य लोगों को धूप और बारिश से बचाते हुए पैदल आवागमन को सहज बनाना था। वर्षा जल निकासी के लिए नालों की व्यवस्था और भवनों की ऊंचाई में एकरूपता भी नगर नियोजन की विशेषता थी। यानी शहर की सुंदरता के साथ नागरिक सुविधा का भी पूरा ध्यान रखा गया था।

आस्था, राजसी वैभव और वैज्ञानिक विरासत - जयपुर की पहचान में धार्मिक आस्था और प्राकृतिक परिवेश का भी महत्वपूर्ण स्थान है। नाहरगढ़ की तलहटी में स्थित तालकटोरा और जयनिवास बाग का क्षेत्र महाराजा सवाई जयसिंह को विशेष प्रिय था। वृंदावन से लाए गए आराध्य देव गोविंद देवजी महाराज को जयनिवास परिसर में प्रतिष्ठित किया गया। आज गोविंद देवजी मंदिर जयपुर की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना का प्रमुख केंद्र है। शहर के मध्य स्थित सिटी पैलेस राजसी स्थापत्य और प्रशासनिक व्यवस्था का उत्कृष्ट उदाहरण है। चंद्रमहल, मुबारक महल, दीवाने आम, दीवाने खास और त्रिपोलिया जैसे भवन तत्कालीन शासन व्यवस्था और शाही जीवनशैली की झलक प्रस्तुत करते हैं।

वहीं जंतर-मंतर में स्थापित सम्राट यंत्र, जयप्रकाश यंत्र और अन्य विशाल उपकरण बताते हैं कि उस दौर में पत्थरों से निर्मित यंत्रों के माध्यम से खगोलीय गणनाओं का कितना उन्नत कार्य किया जाता था। यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल यह वेधशाला जयपुर की वैज्ञानिक चेतना का वैश्विक परिचय है।

हवा महल से राम चौक (अल्बर्ट हॉल) तक : स्थापत्य का विस्तार - सवाई जयसिंह के बाद भी जयपुर की स्थापत्य यात्रा आगे बढ़ती रही। महाराजा ईश्वरी सिंह ने ईसरलाट यानी सरगासूली का निर्माण कराया। इसके बाद महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने 1799 में हवा महल बनवाया। मधुमक्खी के छत्ते जैसी इसकी संरचना, असंख्य झरोखे और विशिष्ट खिड़कियां इसे विश्वभर में अलग पहचान देते हैं। शाही महिलाओं को पर्दा परंपरा का पालन करते हुए सार्वजनिक आयोजनों और बाजारों को देखने की सुविधा देना इसके निर्माण का प्रमुख उद्देश्य था।

राम निवास बाग और उसमें स्थित राम चौक यानी अल्बर्ट हॉल भी जयपुर की स्थापत्य विरासत के महत्वपूर्ण अध्याय हैं। आज यह संठाहालय राजस्थान की कला, संस्कृति और इतिहास की अनमोल धरोहरों को संजोए हुए है।

जैपर से लेकर आधुनिक जयपुर में रूपांतरण - समय के साथ जयपुर का विस्तार परकोटे से बाहर भी हुआ। महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय के शासनकाल में शिक्षा, चिकित्सा, आवास और सार्वजनिक सुविधाओं के विकास को गति मिली। महाराजा कॉलेज, महारानी कॉलेज, महारानी गायत्री देवी स्कूल और सवाई मानसिंह अस्पताल जैसी संस्थाओं ने आधुनिक जयपुर की आधारशिला मजबूत की। बनी पार्क, सी-स्कीम और न्यू कॉलोनी जैसे क्षेत्रों के विकास ने शहर के विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया। इस तरह जयपुर ने अपनी परंपरागत पहचान को बनाए रखते हुए आधुनिक महानगर बनने की यात्रा शुरू की।

विरासत के सामने नई चुनौतियां : क्या बचा पाएंगे शहर की मूल पहचान? - 299 वर्षों की यात्रा में जयपुर ने अनेक बदलाव देखे हैं। आज नई सड़कें, फ्लाईओवर, आवासीय कॉलोनियां और व्यावसायिक परिसर इसके विकास की कहानी कह रहे हैं, लेकिन इस विस्तार के बीच मूल नगर योजना और स्थापत्य विरासत का संरक्षण बड़ी चुनौती बन गया है। पुराने बाजारों के बरामदों पर अतिक्रमण, हवेलियों में मनमाने बदलाव, ऐतिहासिक भवनों के मूल स्वरूप से छेड़छाड़ और सार्वजनिक स्थानों का संकुचन चिंता का विषय हैं। जिन बरामदों का निर्माण पैदल यात्रियों की सुविधा के लिए हुआ था, वे कई स्थानों पर दुकानों के विस्तार तक सीमित हो गए हैं।

आवश्यकता है कि परकोटे के भीतर पारंपरिक स्थापत्य शैली और भवनों की एकरूपता बनाए रखी जाए। ऐतिहासिक हवेलियों, मंदिरों, चौपड़ों और दरवाजों का वैज्ञानिक तरीके से संरक्षण हो। पुरानी जल निकासी व्यवस्था की उपयोगिता को आधुनिक तकनीक से जोड़ा जाए तथा नए शहरी क्षेत्रों में हरियाली, खुली जगह और नागरिक सुविधाओं को प्राथमिकता मिले। इसके साथ नागरिकों, व्यापारियों और युवा पीढ़ी को विरासत संरक्षण के अभियान से जोड़ना भी जरूरी है।

299 वर्षों की विरासत, भविष्य का संकल्प - जयपुर की महानता केवल इसके महलों, चौड़ी सड़कों और भव्य इमारतों में नहीं, बल्कि उस विचार में छिपी है, जिसने तीन शताब्दी पहले भविष्य की आवश्यकताओं को समझकर एक आदर्श नगर की कल्पना की थी। इसकी सड़कों में गणित है, चौपड़ों में सामाजिक जीवन का दर्शन, बाजारों में व्यापारिक दूरदर्शिता, मंदिरों में सांस्कृतिक चेतना और महलों में स्थापत्य कला का वैभव।

महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने भविष्य का सपना देखा और विद्याधर भट्टाचार्य ने उसे पत्थरों, सड़कों और इमारतों में जीवंत कर दिया। आज हमारी जिम्मेदारी है कि विकास की गति बनी रहे, लेकिन शहर की आत्मा न खोए। आधुनिकता का स्वागत हो, लेकिन इतिहास की पहचान धुंधली न पड़े। गुलाबी नगरी के 299वें स्थापना दिवस पर यही संकल्प होना चाहिए कि जयपुर को केवल बड़ा महानगर नहीं, बल्कि अपनी विरासत, संस्कृति, सुंदरता, हरियाली और सुव्यवस्थित नगर जीवन के साथ दुनिया का आदर्श शहर बनाया जाए।

–डॉ. गोरधन लाल शर्मा,
लेखक, समाजशास्त्री व वरिष्ठ अधिकारी।

कैंसर जागरूकता या भय का व्यापार?



प्रो. अशोक कुमार

आज विश्व भर में जब भी स्वास्थ्य और चिकित्सा की चर्चा होती है, एक वाक्य सबसे अधिक दोहराया जाता है–"कैंसर एक महामारी की तरह बहुत तेजी से फैल रहा है।" अस्पतालों के बड़े-बड़े होर्डिंग्स, अखबारों के पूरे पन्ने के विज्ञापन और टेलीविजन पर प्रसारित प्रचार सामग्री में अक्सर यह चेतावनी दी जाती है कि हर तीसरा या चौथा व्यक्ति कैंसर के जोखिम में है। इसके तुरंत बाद संदेश आता है कि हमारे अस्पताल में अमुक नई मशीन आ गई है, आइए और जांच कराइए।

इस प्रकार के प्रचार-प्रसार से आम जनमानस तक जागरूकता बाद में पहुँचती है, पहले भय घर कर जाता है। और जैसा कि चिकित्सा विज्ञान स्वयं मानता है–भय से उपजा तनाव शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को क्षीण कर देता है, जो अपने आप में कई दैहिक व मानसिक व्याधियों की मूल जड़ बन जाता है। जनस्वास्थ्य संवाद में फियर साइकोसिस के स्थान पर वैज्ञानिक समझ और विश्वास की आवश्यकता है !

यहाँ यह गंभीर प्रश्न उठता है कि क्या कैंसर के आंकड़ों और वास्तविकताओं को समाज के सामने सही वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में रखा जा रहा है, या फिर यह कॉर्पोरेट चिकित्सा तंत्र द्वारा खड़ा किया गया एक मनोवैज्ञानिक दबाव है?

चिकित्सा विज्ञान के इतिहास को यदि निष्पक्ष दृष्टि से देखा जाए, तो पिछले कुछ दशकों में आधुनिक चिकित्सा ने संक्रामक और जानलेवा बीमारियों पर अभूतपूर्व विजय प्राप्त की है। विज्ञान की तरक्की से जीवन प्रत्याशाबढ़ी है और असामयिक मृत्यु के सामान्य कारणकाफी सीमित हो गए हैं। यदि इसे सही परिप्रेक्ष्य में समझाया जाए, तो संदेश यह होना चाहिए: "विज्ञान की प्रगति से हमने अन्य जानलेवा रोगों को नियंत्रित कर लिया है। जीवन प्रत्याशा बढ़ने और डायग्नोस्टिक्स के अत्यंत उन्नत होने से अब कैंसर के मामलों की पहचान समय रहते हो रही है। आज यह बीमारी पहले की तरह असाध्य नहीं, बल्कि समय पर पहचान होने पर पूरी तरह साध्य है।" किंतु इसके विपरीत, कॉर्पोरेट अस्पताल और विपणन तंत्र इसे इस प्रकार पेश करते हैं मानो मानव जाति एक लाइलाज सुनामी की चपेट में है। उन्नत मशीनों का विज्ञापन यह भरोसा देने के लिए नहीं किया जाता कि "हम आपको स्वस्थ करेंगे", बल्कि यह अहसास कराने के लिए किया जाता है कि "आप संकट में हैं, इसलिए हमारे पास आना ही एकमात्र विकल्प है।"

चिकित्सा व्यवसाय का मूल ध्येय रोगी को संबल, संवेदनशीलता और आशा देना है। जब एक सामान्य नागरिक हर दिन ऐसे भयावह विज्ञापनों और चेतावनियों के संपर्क में आता है, तो उसमें कैंसर-फोबिया विकसित हो जाता है। किसी भी सामान्य गांठ या मामूली लक्षण पर व्यक्ति मौत के डर से कांप उठता है। यह भय स्वास्थ्य संवर्धन नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के नाम पर आर्थिक और मानसिक दोहन का मार्ग प्रशस्त करता है।

जब भी कोई प्रबुद्ध व्यक्ति या वैज्ञानिक इस फियर साइकोसिस पर आपत्ति जताता है, तो अक्सर व्यावसायिक चिकित्सा जगत इसे अपनी आक्रामकता या नाराजगी से दबाने का प्रयास करता है। लेकिन सत्य यही है कि भय कभी भी स्वस्थ समाज की नींव नहीं बन सकता। इस दिशा में सुधार के लिए चिकित्सा जगत, कॉर्पोरेट सेक्टर और नीति-निर्माताओं को मिलकर एक आचार संहिता और सकारात्मक संवाद की दिशा तय करनी होगी:

चिकित्सा जगत और डॉक्टरों की नैतिक जिम्मेदारी है की संबल पहले, निदान बाद में: डॉक्टरों को यह समझना होगा कि क्लिनिकल प्रैक्टिस केवल दवाओं और रेडिएशन की नहीं, बल्कि रोगी के मनोबल की भी है। परामर्श के दौरान बीमारी को 'असाध्य हौव्वा' बनाने के बजाय "नियंत्रण योग्य स्थिति" के रूप में प्रस्तुत किया जाए।

सटीक सांख्यिकी का मानवीय रूप:मरीजों और समाज को यह बताया जाए कि आज कैंसर की शुरुआती पहचान से स्वस्थ होने की दर कई गुना बढ़ चुकी है।

वैज्ञानिक यथार्थवाद : डायग्नोस्टिक और स्क्रीनिंग टूल्स का उपयोग केवल भय दिखाकर फुल बॉडी चेकअप बेचने के लिए न हो, बल्कि वैज्ञानिक आवश्यकता के आधार पर हो।

कॉर्पोरेट सेक्टर और विज्ञापनों के लिए डूज़ और डोंट्स क्या न करें :अलार्म बजाने वाले आंकड़े: "हर चौथा व्यक्ति खतरे में है" जैसे सनसनीखेज नारों पर रोक लगे। मशीनों का अंधाधुंध महिमामंडन: मशीनों को चमत्कारी हथियार और मरीज को लाचार उपभोक्ता के रूप में चित्रित न किया जाए। भावनात्मक ब्लैकमेल: ऐसे दृश्य या शब्द जिनसे परिवार में दहशत पैदा हो, विज्ञापनों में पूरी तरह वर्जित हों।

क्या करें : निवारक जीवनशैली पर बल: विज्ञापनों का 80 प्रतिशत भाग खान-पान, शारीरिक सक्रियता, तंबाकू-शराब निषेध, और तनाव-मुक्ति पर केंद्रित होना चाहिए। सकारात्मक परिणाम साझा करें: बीमारी के भय के बजाय उन लोगों की कहानियाँ सामने लाएं जिन्होंने सामान्य जीवनशैली और समय पर उपचार से कैंसर को मात दी। स्पष्ट और सरल संकेत: शरीर के सामान्य चेतावनी संकेतों की शांत और निष्पक्ष जानकारी दी जाए, बिना यह कहे कि हर लक्षण कैंसर ही है।

आम जनता के लिए संदेश: भय छोड़ें, ज्ञान अपनाएं, भय तनाव देता है, ज्ञान सुरक्षा देता है: किसी भी बीमारी से बचाव का सबसे बड़ा हथियार भयभीत होना नहीं, बल्कि जागरूक और अनुशासित जीवन जीना है। संतुलित दिनचर्या:प्राकृतिक भोजन, नियमित व्यायाम, जैविक घड़ी के अनुसार निद्रा और सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण शरीर की स्वाभाविक रक्षा प्रणाली को मजबूत करते हैं।

निष्कर्ष : कैंसर एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौती अवश्य है, किंतु यह मानव इतिहास की कोई ऐसी पहेली नहीं जिसका उत्तर विज्ञान के पास न हो। आज आवश्यकता इस बात की है कि स्वास्थ्य संवाद का केंद्र "व्यावसायिक भय" से हटाकर "वैज्ञानिक विश्वास और जीवनशैली सुधार" पर केंद्रित किया जाए। चिकित्सा बिरादरी को स्वयं आगे आकर यह संदेश देना होगा कि हम मशीनों के व्यापारी नहीं, बल्कि जीवन के संरक्षक हैं। जब समाज को भय के बजाय भरोसे और ज्ञान की रोशनी मिलेगी, तभी हम एक स्वस्थ और तनावमुक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे।

–प्रोफेसर अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति, कानपुर एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय

राशिफल रविवार 15 नवम्बर, 2026



पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, रविवार, विक्रम संवत-2083, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 11:29 तक, गंड योग सोमवार प्रात: 7:16 तक, कौलव करण दिन 12:43 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मकर, मंगल-सिंह, बुध-तुला, गुरू-सिंह, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 11:29 तक है। रवियोग रात्रि 11:29 तक बना रहेगा। आज डाला छठ महापर्व पूर्ण और डाला छठ पर्व पर अस्तगामी सूर्य को अर्ध्य दिया जायेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया– चर 8:10 से 9:31 तक, लाभ-अमृत 9:31 से 12:11 तक, शुभ 1:32 से 2:52 तक।

राहुकाल– 4:30 से 6:00 तक, सूर्योदय 6:50, सूर्यास्त 5:32



मेष

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



सिंह

अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।



धनु

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।



वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



कन्या

परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।



मकर

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। चलते कार्यों में प्रगति होगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मानसिक तनाव दूर होगा।



मिथुन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब होने का भय बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।



तुला

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। अतिथियों का आगमन बना रहेगा।



कुंभ

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। मानसिक तनाव बना रहेगा।



कर्क

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्म